गमले :-

आधुनिक युग में हर छोटा हो या बड़ा. कोठी या फ्लैट बालकनी हो या ड्राईंग रूप का कोना. टेरिस हो या आंगन आप फल. फूल या सब्जियाँ लगानी हो तो गमले की आवश्यकता स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी। गमलों में पौधों को लगाने का सर्वाधिक लाभ यह है कि उन्हें आसानी से स्थांतरित उस स्थान का सौंदर्य भी बढ़ा जा सकता है, जहाँ उन्हें रखा जाता है।

बागवानी में गमले का महत्व :-

आधुनिक युग कलात्मक. सौंदर्य व सजावट का युग है आजकल अनेक आकार प्रकार के अत्यंत सुंदर व आकर्षक गमले बाजार में उपलब्ध है जिनपर हम सभी फल-फूल व हरियाली युक्त अलंकृत पौधे लगाकर अपने घर. बाग. आंगन. वाटिका पार्क. भवन आदि की सुन्दरता बढ़ा कर प्रकृति के समीप रहने का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। गमले एक प्रकार से गतिशील अलंकृत व सुरुचिपूर्ण बागवानी के अपने साथ हरियाली व प्रकृति को साथ रख सकते हैं।

स्थायी बाग वाटिकाओं व पार्कों की अपेक्षा इन्हें सरलता से सींचा भी जा सकता है एवं इनसे आप कहीं भी सजावट कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ग्रीष्म ऋतु एवं वर्षा से उन्हें बचाने के लिए किसी सुरक्षित स्थान पर भी ले जा सकते हैं। इस तरह अतिरिक्त मौसम के प्रभाव से इन्हें बचाया जा सकता है, यही कारण है कि स्थान अभाव के कारण आजकल गमलों की अलंकृत बागवानी दिन प्रतिदिन बढ़ रही है नगर के सीमित वातावरण में रहने वाले नागरिकों का प्रकृति के प्रति प्रेम को गमलों की बागवानी के प्रति आकर्षित कर रहा है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गमले के प्रकार :-

गमलों के दो आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है -

(i) गमलों के पदार्थ के आधार पर

(ii) गमलों के आकार के आधार पर ।

i) गमलों के पदार्थ के आधार पर :-

क) **मिट्टी के गमले** – यह परंपरागत गमले होते हैं. मिट्टी के अन्य बर्तनों की तरह इन्हें चाक पर गढ़कर बनाया जाता है ।

ख) **चिकनी मिट्टी के गमले** – यह देखने में चमकीले और काफी चिकने होते हैं ।

ग) **लकड़ी / बांस के गमले** – ये लकड़ी या बांस के खपच्चियों को जोड़कर बनाये जाते हैं । ये गमले स्वभाविक रूप से अन्य गमलों से हल्के होते हैं ।

घ) **प्लास्टिक के गमले** – ये गमले अन्य सभी प्रकार के गमलों से हल्के होते हैं, ये ऐसे स्थानों के लिए उपयुक्त होते हैं जहाँ इन्हें बार - बार जगह बदलना होता है ।

ङ) **पत्थर के गमले** – यह किसी प्राकृतिक गमलाकार पत्थर को तराशकर इन्हें बनाया जाता है. यह अत्याधिक भारी होने के कारण अधिक लोकप्रिय नहीं हैं ।

Scanned with CamScanner

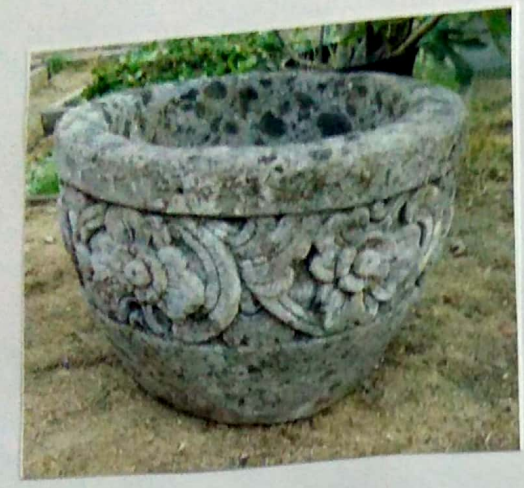

Scanned with CamScanner

च) सीमेंट से बने गमले – ये बालू और सीमेंट से बने रहते हैं. ये गमले भारी और मजबूत होते हैं। इन गमलों को स्थानों से स्थानांतरित करने से टूटने की संभावना कम होती है।

iii) गमलों के आकार के आधार पर :-

क) गोलाकार गमले
ख) चौकोकार गमले
ग) षट्कोणीय गमले
घ) अंडाकार गमले
ङ) तश्तरीनुमा गमले

गमलों के उपयोग से सम्बंधित आवश्यक बातों को जानना आवश्यक है। किसी पौधों को गमलों में लगाए जाने के दौरान भिन्न-भिन्न बातों का ध्यान रखा जाए वे निम्नलिखित हैं :-

i) गमलों के आकार के आधार पर
ii) बरामदे के लिए 30 से. मी. गहरे और 30 से० मी० व्यास के गमले उपयुक्त होते हैं।
iii) सीमेन्ट के गमलों की उम्र ज्यादा होती है।
iv) अस्थायी आवास स्वामियों (मालिकों) के लिए लकड़ी के गमले उपयुक्त होते हैं।
v) किसी भी गमलों की तलहटी में छेद होना जरूरी है।
vi) छेद को इस प्रकार बंद किया जाना चाहिए कि मिट्टी भी न निकले और पानी भी रिसते रहे।
vii) खर, पाम आदि पौधों के लिए गमले चुने जाने चाहिए।

Scanned with CamScanner

गमलों को भरना :-

गमले भरने की विधियाँ :- सर्वप्रथम गमलों के निचले भाग में गमले के टुकड़े अथवा कंकड़ से लगभग 6-8 से.मी. भरा जाना चाहिए। गमले की सतह के छिद्र पर उभरे हुए गमले का टुकड़ा इस प्रकार से रखा जाना चाहिए, ताकि आधा छेद ही बंद हो पुनः दूसरा भाग पहले टुकड़े के ऊपर तिरछा रख देना चाहिए फिर अन्य टुकड़े को भरना चाहिए।

अब इसके ऊपर पत्ती की खाद व कम्पोस्ट मिली हुई दोमट मिट्टी मिलाकर भर देनी चाहिए, यदि मिट्टी भारी है तो इसमें कुछ अंश बालू मिलाने से मिट्टी भुरभुरी हो जाती है एवं पानी का निकास भी अच्छा से हो जाता है। खाद मिली हुई मिट्टी चूना मिलाने से मिट्टी और भी अधिक उपजाऊ हो जाती है. यदि मौसमी पुष्प गमलों में लगाते हैं. तो खाद मिट्टी से रेत - कोयला एवं पत्ती की खाद देने से पुष्पों के बढ़ने में सौंदर्य में वृद्धि होती है।

गमला भरने से पूर्व की तैयारी :- गमला सुंदर, स्वच्छ व कीटाणुरहित रहे इसके लिए कुछ सावधानियाँ रखनी आवश्यक है। यदि गमला पुराना है तो उसे नारियल के रेशों व गर्म पानी से रगड़कर उसका प्रयोग करना चाहिए। यदि नये गमले हैं तो उन्हें दो-तीन दिन पानी में डालकर रखना चाहिए। जिससे हानिकारक कीड़े या काई आदि साफ हो जाए। इसके बाद गमलों को सूखा लेना चाहिए जिससे मिट्टी किनारे पर न लगी रह जाए। यदि मिट्टी किनारों पर चिपकी रह जाती है तो वायु संचालन में बाधा पड़ सकती है। हमें छोटी-छोटी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए, जैसे गमले में क्रमानुसार गमले के टुकड़े व कंकड़ आदि भी साफ रहने चाहिए ताकि ऊपर पहले से चिपकी हानिकारक मिट्टी निकल जाए।

हमें इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए कि गमले में भरी जानेवाली मिट्टी, खाद, पौधे की प्रकृति के अनुरूप है जिससे पौधा सुचारु रूप से बढ़ता फूलता रहे। सूखी मिट्टी में पानी समान रूप से वहाँ पहुँच जाता है। अतः गमले में भरी जाने वाली मिट्टी बिल्कुल सूखी नहीं होनी चाहिए। पौधा सरलता से न निकाला जा सके इसलिए गमले की मिट्टी को दबा-दबा कर भरा जाना चाहिए। गमले को बहुत अधिक मिट्टी, खाद आदि से नहीं भरना चाहिए। गमले में पानी देने पर उसकी उपजाऊ मिट्टी गमले से ऊपर बह जाती है एवं पौधों को पूरा पानी मिलने में भी कठिनाई होती है। पौधों को लगाने के बाद पौधों को छाया में रखना चाहिए। जब पौधा का जड़ मिट्टी में पकड़ ले तब गमले के पौधों को धीरे-धीरे धूप में रखना चाहिए। गमले का चुनाव पौधे के आकार के अनुसार करना चाहिए।

पौधा लगाने के बाद भी हमें कुछ सावधानियाँ रखनी चाहिए जो इस प्रकार से है :-

i) पौधे को सूर्य की तेज धूप से रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए पौधों को छाया वाले स्थान में स्थानान्तरित करना चाहिए। मोटे कपड़े से ढकने का प्रबंध करना चाहिए।

ii) यदि गमलों में पौधों को दीपक या अन्य कीट हो तो मिट्टी से तुरन्त निकाल देना चाहिए। और कीटनाशक औषधि छिड़क देना चाहिए।

iii) पौधे की मिट्टी को भी यथासंभव देखते रहना आवश्यक है। यदि पौधे की पत्तियाँ काली पड़ने लगे या मुरझाने लगे तो समझ लेना चाहिए कि पौधे में रोग लग गया है। ऐसी अवस्था में पौधों में उचित रसायनों का

उपयोग करना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो समझ है कि अब पौधों की जड़ों को बचाते हुए मिट्टी को बदल देना है।

IV) पौधों को खाद देते समय इसका ध्यान रखना चाहिए कि खाद का प्रभाव अच्छी तरह से पहुँच जाना चाहिए। इतनी सावधानियाँ देते हुए हम निश्चय ही अच्छे परिणाम के बागवानी प्राप्त कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner